

नौकरी की किताब
सत्र 26: नौकरी की किताब में भगवान
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 26 है, नौकरी की किताब में भगवान।

परिचय: भगवान का संदिग्ध व्यवहार? [00:22-2:06]

तो, अब हम एक बहुत ही दिलचस्प अध्ययन पर पहुँच रहे हैं। हम अय्यूब की पुस्तक में परमेश्वर को कैसे देखते हैं? आप जानते हैं, जब आप इसे देखना शुरू करते हैं, तो यह बहुत अच्छा नहीं लगता है। हां, और फिर, चीजों को सबसे बुनियादी आकस्मिक पढ़ने के तरीके से देखकर, उसे लगता है कि उसे पूछना होगा कि शैतान क्या कर रहा है। वह एक आदमी के जीवन के साथ दांव लगाता है। वह अपनी स्वयं की स्वीकारोक्ति के कारण अय्यूब को बर्बाद कर देता है, जिसमें उसके परिवार का सफाया भी शामिल है। वह उन आरोपों के स्पष्टीकरण के लिए अय्यूब की बार-बार की गई दलीलों को नजरअंदाज कर देता है, जिनके कारण उसे बर्बाद होना पड़ा। वह अय्यूब को "मैं भगवान हूँ, और तुम नहीं हो" जैसे भाषण से डराता है। वह उसे बताता है कि कैसे उसने पौराणिक शक्ति और रहस्य के दो प्राणी बनाए। वो सब किस बारे में है? वह बिना किसी स्पष्टीकरण या बचाव के उसे उसकी समृद्धि वापस दे देता है। वाह वाकई? यह वह भगवान है जिसकी हम पूजा करते हैं। यह समझना आसान है कि पुस्तक के पाठक भगवान की तस्वीर के साथ संघर्ष करते हैं। यदि यह इतना विनाशकारी न होता तो यह लगभग हास्यास्पद लगता। क्या यह ईश्वर का स्वयं का रहस्योद्घाटन है? हम इन नेतृत्वों को कैसे लेते हैं जिनका अंत विनाशकारी प्रतीत होता है?

किताब ईश्वर के बारे में क्या बताती है [2:06-3:14]

मुझे लगता है कि हमें यहां अपनी खोज को दोबारा लिखना होगा। इसके बजाय, क्या यह ईश्वर का स्वयं का रहस्योद्घाटन है, आइए पूछें, यह पुस्तक ईश्वर के बारे में क्या प्रकट करती है? मेरा प्रस्ताव है कि जब हम अय्यूब की पुस्तक में ईश्वर के बारे में सोचते हैं, तो हमें इस विचार से शुरुआत करनी होगी कि वह भी अय्यूब की तरह ही एक चरित्र है और उसके दोस्त और उसकी पत्नी भी पात्र हैं।

जैसे बेहेमोथ और लेविथान पात्र हैं। वे पात्र हैं, और ईश्वर एक पात्र है जिसे साहित्य में अलंकारिक रूप से आकार दिया गया है। पुस्तक के लेखक ने ईश्वर के चरित्र को आकार दिया है।

ईश्वर के बारे में प्रारंभिक प्रश्नों पर दोबारा गौर करना [3:14-7:08]

अब उन प्रतीत होने वाली नकारात्मक विशेषताओं पर विचार करते हुए जिनका हमने उल्लेख किया है, आइए उन पर फिर से विचार करें। क्या भगवान को चैलेंजर की गतिविधियों के बारे में सूचित करने की आवश्यकता है? नहीं, पुस्तक उन्हें पारंपरिक सोच का उपयोग करते हुए प्रस्तुत करती है कि स्वर्गीय परिषद स्वर्ग के दृश्य में बातचीत को मंचित करने के लिए कैसे काम करती है। इसी से कारोबार आगे बढ़ता है. यहोवा को साहित्यिक चरित्र-चित्रण द्वारा चित्रित किया गया है। उन्हें एक शाही व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो उन पदाधिकारियों से रिपोर्ट प्राप्त करता है जिन्हें कार्य सौंपे गए हैं। यहोवा वह भूमिका निभाता है। यह एक साहित्यिक रूपांकन है. हमें यह विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है कि ईश्वर वास्तव में इसी तरह से कार्य करता है। यदि आपने ऐसा किया भी, तो यह मानने का कोई कारण नहीं होगा कि उसका प्रश्न उसकी अज्ञानता को प्रकट करता है। उनके प्रश्न का उद्देश्य केवल एक रिपोर्ट प्राप्त करना और प्रतिक्रिया उत्पन्न करना है। यह स्थिति स्थापित करता है. इसकी एक साहित्यिक भूमिका है.

क्या ईश्वर स्वयं को शैतान के साथ दांव पर लगाता है? नहीं, अनेक खातों पर, हम उनमें से कुछ पर पहले ही चर्चा कर चुके हैं। यह इस बारे में रहस्योद्घाटन नहीं कर रहा है कि ईश्वर कैसे कार्य करता है। इसके द्वारा निभाई गई साहित्यिक भूमिका, इसे एक दांव कहें, हालांकि मुझे नहीं पता कि यह क्या है, शुरू से ही यह प्रदर्शित करना है कि अय्यूब की पीड़ा उसके द्वारा किए गए किसी भी कार्य का परिणाम नहीं है। वही बुनियाद है. यह उस परिदृश्य को स्थापित करता है जो पुस्तक में सामने आने वाला है। प्रश्न महत्वपूर्ण भाग है: क्या अय्यूब बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करता है? बाकी सब एक साहित्यिक सेटअप है, ताकि मुद्दे का इलाज किया जा सके।

क्या परमेश्वर को यह पता लगाना है कि अय्यूब की प्रेरणाएँ वास्तव में क्या हैं? मेरा मतलब है, क्या यह विस्तारित पुस्तक अय्यूब की प्रेरणाओं की खोज करने के लिए है? क्या भगवान को नहीं पता?

क्या उसे पता लगाने की ज़रूरत है? नहीं, उसे पता लगाने की ज़रूरत नहीं है. पाठकों के लिए यह प्रश्न हल नहीं हो रहा है कि क्या अब तक का सबसे धर्मी व्यक्ति दुनिया के बिखर जाने पर भी अपनी धार्मिकता बनाए रखेगा? यह पाठ हमारे प्रश्नों का उत्तर देता है, न कि ईश्वर की अनिश्चितताओं का। परमेश्वर को अय्यूब के बारे में कोई अनिश्चितता नहीं है। पाठकों को यह बताने में कोई लाभ नहीं है कि ईश्वर जानता है कि अय्यूब की प्रेरणाएँ क्या हैं और वे शुद्ध हैं क्योंकि यह अय्यूब नहीं है जो हमारी अंतिम चिंता है। पाठकों के रूप में, हम इसकी जांच कर रहे हैं, या हमें इस बात की जांच में ले जाया जा रहा है कि भगवान का न्याय हमारे अनुभवों और परिस्थितियों के साथ कैसे संपर्क करता है। पुस्तक का संबंध इस बात से है कि हमें क्या खोजने की आवश्यकता है, न कि इस बात से कि ईश्वर को क्या खोजने की आवश्यकता है। फिर, स्वर्ग का दृश्य प्रश्नों को गति देने का एक साहित्यिक उपकरण है।

एक खेल के रूप में काम [7:08-8:08]

क्या परमेश्वर को अय्यूब की परवाह है? क्या हमें अय्यूब के प्रति परमेश्वर की सापेक्ष देखभाल का अनुमान उसके प्रश्न से लगाना चाहिए, "क्या तू ने मेरे दास अय्यूब को देखा है?" खैर, हम अय्यूब के परिचय से लेकर अय्यूब के बारे में बातचीत से उसके बारे में परमेश्वर की भावनाओं का अनुमान नहीं लगा सकते। स्वर्ग के दृश्य में हर चीज़ एक साहित्यिक रचना, एक उपकरण, एक परिदृश्य है जिसे दृश्य को शाब्दिक रूप से सेट करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। पात्रों को नाटक के पात्र ही माना जाना चाहिए। मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि जॉब को एक नाटक या नाटकीय प्रस्तुति के रूप में डिज़ाइन किया गया है, लेकिन हमें पात्रों के बारे में इसी तरह सोचना होगा। उन्हें कथा द्वारा आकार दिया जा रहा है, और उनके कार्य कथा के उद्देश्यों को पूरा करते हैं।

चरम चरित्र-चित्रण: ईश्वर अपरिवर्तनीय के रूप में [8:08-12:17]

क्या परमेश्वर को अय्यूब की परवाह नहीं है क्योंकि वह उसकी बर्बादी की शुरुआत कर रहा है? नहीं, हम इसका अनुमान नहीं लगा सकते. साहित्यिक परिदृश्य ऐसे सभी आकलनों को परे रखता है। क्या परमेश्वर अय्यूब के बच्चों को हिंसक तरीके से मिटा देता है? केवल एक बात कहने के लिए भगवान को मानव जीवन के प्रति लापरवाह मानने का कोई कारण नहीं है।

अय्यूब की पीड़ा की चरम सीमा को उसकी धार्मिकता और समृद्धि की चरम सीमा के समान ही स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। बातचीत के लिए चरम महत्वपूर्ण है। कुल हानि से कम कुछ भी उस ज्ञान निर्देश के लिए आवश्यक कारक प्रदान नहीं करेगा जिस पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यदि अय्यूब ने सिर्फ अपनी संपत्ति खोई है, अपने परिवार को नहीं, तो आप वास्तव में इस मुद्दे पर बात नहीं कर सकते। यदि अय्यूब ने अपना स्वास्थ्य नहीं, बल्कि अपनी संपत्ति और अपना परिवार खो दिया होता, तो बातचीत काम नहीं करती। आप हमेशा कहेंगे, ठीक है, उसने सब कुछ नहीं खोया है। आप जानते हैं, उनका परिवार उनके स्वास्थ्य से अधिक महत्वपूर्ण था। तो, उसने केवल अपना स्वास्थ्य या धन खोया। खैर, कम से कम उसे परिवार तो मिल गया। लेकिन नहीं, इस बातचीत के लिए उसे सब कुछ खोना होगा।

यह उसी प्रकार की सोच है जिसका उपयोग हम तब करते हैं जब हम यीशु के दृष्टान्तों का सामना करते हैं, जो ऐसी स्थितियों का निर्माण करके यथार्थवादी मुद्दों की जांच करते हैं जो यथार्थवाद को बेहद अतिरंजित और अविश्वसनीय कारकों के साथ मिलाते हैं। चरम तब एक स्पष्ट संकेत प्रदान करते हैं कि हम एक साहित्यिक निर्माण से निपट रहे हैं।

क्या परमेश्वर अय्यूब की विनती को हृदयहीनता से अनदेखा करता है? खैर, यह सच है कि ईश्वर अनुत्तरदायी है। लेकिन अगर अय्यूब परमेश्वर को मुकदमे में फंसाने में सफल हो गया तो किताब और उसकी शिक्षा बुरी तरह से लड़खड़ा जाएगी। फिर ईश्वर ऐसी याचनाओं से अप्रभावित है, इससे वह हृदयहीन नहीं हो जाता; यह दर्शाता है कि यह समाधान का मार्ग नहीं है।

पुस्तक के संदेश का उद्देश्य यह बताना है कि ईश्वर द्वारा स्पष्टीकरण देने से संदेश प्राप्त नहीं होता है। और इसलिए, निःसंदेह, परमेश्वर अय्यूब द्वारा उसे स्पष्टीकरण देने के लिए आकर्षित करने के प्रयासों को अस्वीकार कर देता है। स्पष्टीकरण देने से पुस्तक का संदेश नष्ट हो जाएगा। ईश्वर की स्थिति का इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि वह अय्यूब के प्रति भावनात्मक रूप से उत्तरदायी है या नहीं। यह मुद्दा दांव पर नहीं है।

क्या परमेश्वर अय्यूब को डराकर चुप करा देता है? खैर, यहोवा के भाषणों में, उसे निर्विवाद रूप से डराने वाले के रूप में चित्रित किया गया है, क्योंकि आखिरकार, वह वश में नहीं है; वह पालतू नहीं

है। लेकिन क्या लेखक का इरादा पाठक को धिनौने झगड़ों में फंसाने का है? यह स्तोत्रों की पुस्तक के बिल्कुल विपरीत है, जिसमें ईश्वर सभी प्रकार की चिंताओं के साथ संपर्क में आता है। यहोवा की यह मुद्रा धार्मिक अंत के बजाय साहित्यिक साधन के रूप में आवश्यक है। बात यह नहीं है कि ईश्वर अप्राप्य है। मुद्दा यह है कि वह अप्रासंगिक है।

यीशु के दृष्टांतों के साथ नौकरी समानताएं [12:17-15:12]

हमने यीशु के दृष्टान्तों का उदाहरण लिया है। आइए यहां बात स्पष्ट करने के लिए एक जोड़े पर नजर डालें। यदि आप मैथ्यू 20 में श्रमिकों और उनकी मजदूरी के दृष्टांत पर नज़र डालें, तो भगवान को ज़मींदार के रूप में चित्रित किया गया है। हम यह अनुमान नहीं लगा सके कि ईश्वर वास्तव में इस तरह से कार्य करता है। वेतन के भुगतान का स्वर्ग में लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, इसका सीधा संबंध नहीं है। केवल अंतिम घंटे काम करने वालों को समान वेतन की पेशकश उस बिंदु को उजागर करने के लिए जानबूझकर अतिशयोक्ति है जो दृष्टांत बता रहा है। हम उस दृष्टांत के माध्यम से यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि ईश्वर कैसे कार्य करता है।

ल्यूक 16 में, हमारे पास चतुर प्रबंधक का दृष्टान्त है। अपने प्रबंधकों के प्रति स्वामी की कृपादृष्टि की प्रतिक्रिया का अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि ईश्वर चाहता है कि हम भी उसी प्रकार उसकी कृपादृष्टि करें। भगवान का चरित्र एक चतुर संचालिका के रूप में प्रकट नहीं हो रहा है। लेकिन दृष्टांत में उन्हें यही साहित्यिक भूमिका दी गई है।

मैथ्यू 18:21 से 35 में निर्दयी सेवक इस प्रकार समाप्त होता है, "मेरा स्वर्गीय पिता तुममें से हर एक के साथ इसी प्रकार व्यवहार करेगा।" फिर भी, हम मदद नहीं कर सकते हैं लेकिन ध्यान दें कि मालिक नौकर को यातना के लिए सौंप देता है जब तक कि वह चुकाने में सक्षम न हो जाए। हम दृष्टांत के संदेश और ईश्वर के स्वरूप के बीच एक सूक्ष्म अंतर महसूस कर सकते हैं।

और अंत में, देर रात के अनुरोध का दृष्टांत, ल्यूक 11 श्लोक पाँच से आठ तक। वह चरित्र जो ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है, मदद करने के लिए अनिच्छुक है और जरूरतमंद व्यक्ति की डांट से उसे कार्रवाई में शामिल होने की जरूरत है। अपनी बात स्पष्ट करने के लिए यह ईश्वर का चरम चित्रण

होगा। इनमें से किसी में भी, क्या हम दृष्टांत की उस जानकारी का उपयोग वास्तव में ईश्वर कैसा है, इसकी रूपरेखा तैयार करने के लिए करते हैं? हम समझते हैं कि दृष्टान्त का आशय कहीं और है। इसी प्रकार, ईश्वर अय्यूब की पुस्तक में एक पात्र है। जिस प्रकार वह दृष्टांतों में एक पात्र है, उसी प्रकार यह जांचना महत्वपूर्ण है कि लेखक उस पात्र के साथ क्या करता है। यह किरदार जो करता है उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। पुस्तक का संदेश ईश्वर की गतिविधियों में नहीं बल्कि ईश्वर की योजनाओं, उद्देश्यों और उसकी नीतियों के बारे में दी गई जानकारी में निहित है।

अय्यूब की पुस्तक में ईश्वर के बारे में संदेश [15:12-16:21]

परमेश्वर के मार्ग लोगों की कल्पना से कहीं अधिक जटिल हैं। उन्हें एक साधारण समीकरण तक सीमित नहीं किया जा सकता। परमेश्वर के बारे में हम जो सीखते हैं वह यह है कि उसे हमारे द्वारा पुष्टि की आवश्यकता नहीं है। वह हमारे प्रति जवाबदेह नहीं है। अपनी बुद्धि से, उसने जैसा उचित समझा, वैसा संसार बनाया और हम उस बुद्धि पर भरोसा करते हैं। इसलिए हमें पुष्टि करनी चाहिए कि परमेश्वर के मार्ग सर्वोत्तम मार्ग हैं। ये वो बातें हैं जो किताब से निकलती हैं, क्योंकि यह हमें ईश्वर के बारे में सिखाती है। हमें सावधान रहना होगा कि हम पुस्तक के गलत क्षेत्रों से ऐसी जानकारी न लें जिससे ईश्वर की विकृत तस्वीर बन जाए। यह अब हमें अय्यूब की पुस्तक के धर्मशास्त्र को समझने की कोशिश करने के लिए प्रेरित करेगा, और यह हमारा अगला खंड होगा।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 26 है, नौकरी की किताब में भगवान। [16:21]